छापाकला का महत्व और आवश्यकता

सपना रल्हन*

चाक्षुष कला के क्षेत्र में छापाकला का एक महत्वपूर्ण है। यह विद्या भी अन्य विद्याओं की तरह स्वतंत्र अभिव्यक्ति का माध्यम है। आज छापाकला में अनेक मौलिक प्रयोग हो रहे हैं। छापाकला के मुख्य दो पहलू हैं। एक छपाई तकनीक का व्यवसायिक प्रयोग, दूसरा इसी माध्यम द्वारा भावनाओं की अभिव्यक्ति। इस विद्या की शुरूआत छपाई तकनीक से हुई है।

देश के विभिन्न शहरों में ललित कला एकेडमी ने अनेक छापाकला की कार्यशाला की स्थापना किये हैं जिससे युवा छापाकारों को कार्यशाला की सुविधाएं प्राप्त होने लगी।

जैसे बंगाल में राष्ट्रीय ललितकला केन्द्र कलकत्ता

राष्ट्रीय ललितकला केन्द्र कलकत्ता

राष्ट्रीय ललितकला केन्द्र भुवनेश्वर

भारत भवन भोपाल

गढ़ी कार्यशाला दिल्ली

ललितकला केन्द्र लखनऊ

ललितकला संस्थान आगरा

आधुनिक ग्राफिक टेकनीक श्रेणी विदेशों के द्वारा यहां आया था। 19वीं शताब्दी से 20वीं शताब्दी तक चलती आ रही है।

गगनेन्द्र नाथ टैगोर पहले भारतीय चित्रकार थे। जिन्होंने लिथो माध्यम में अपनी भावनाओं को लिंक से हटा कर अभिव्यक्ति प्रदान की है। इन्होंने तत्कालीन समाज के रीति रिवाजों का व्यंगात्मक चित्रण अपने छापों में किया है। सन् 1917–1918 में स्थानीय कलाकारों के साथ मिलकर इन्होंने एक स्वतंत्र छापाकारों का संगठन विचित्रों की स्थापना की थी। इन छापाकारों ने नन्द लाल बोस समरेन्द्र और एण्ड्रे कपिल्स मुकुल डे आदि थे। मुकुल डे का वर्क लेकिन बंगाल से प्रभावित नहीं था। आन्द्र के आने के बाद शान्ति निकेतन के छापाकला में काफी विकास हुआ।

1950 में Indian Printmaking एक नया मोड लिया। बहुत सारे युवा कलाकार सॉफ्ट ग्राउन्ड का उपयोग करने लगे। न्यू टेक्नीक ब्युज होने लगी। सिल्क स्क्रीन, कलर लिथोग्राफी मिक्स मीडिया आदि में काम होने लगे।

सन् 1963 में ललित कला अकादमी दिल्ली के आर्थिक सहयोग से एक एचिंग

*गाइड–डॉ० सरोज भार्गव

प्रेस खरीदी जिससे अनेक स्थानीय छापाकारों को लाभ हुआ। अनेक कलाकार सोसायटी में आकर काम करने जिसमें प्रमुख है ये सनद कर स्यामल दत्त रे आदि कालान्तर में दीपक बनर्जी फ्रांस की छात्रवृत्ति पाकर पेरिस गये। कलकत्ता के छापाकारों में अमिताभ बनर्जी का विशिष्ट स्थान है। इन्होंने ग्राफीक के सभी विद्याओं में काम किया।

बंगाल में राष्ट्रीय ललितकला केन्द्र कलकत्ता की स्थापना के बाद अनेक छापाकारों को कार्यशाला की सुविधा प्राप्त होने लगी। भारत में आज तो ग्राफिक कला का काफी विकास हो गया है और कलाकारों को काम करने के लिए आवश्यक सुविधाएं भी महानगरों में प्राप्त होती जा रही हैं। किन्तु स्वतंत्रता पूर्व बहुत कम कला संस्थाओं में इस माध्यम में कार्य होता था और वह भी कम में।

बड़ौदा के कला विश्वविद्यालय में कार्यरत ज्योति भट्ट छापाकला को अभिवृद्धि में संलग्न है हालांकि यहां छापाकर के कार्य बहुत पहले से हो रहा है।

दिल्ली के कला विश्वविद्यालय में कार्यरत अनुपम सूद मिजोटिंट और एक्वाटिट के माध्यम से अनेक मौलिक प्रयोग कर रही है। यही सुविधाएं बहुत पहले से थी।

लेकिन खैरागढ़, (म०प्र०) विश्वविद्यालय में बहुत बाद में इसका विकास हुआ फिर भी यहां के छात्र छापाकला के क्षेत्र में काफी आगे है। इनको गुरू बी० नागदास जो स्वयं एक छापाकार हैं। इनका जन्म केरल में हुआ और शान्ति निकेतन से इन्होंने शिक्षा प्राप्त की। इन्होंने छापाकला के विभिन्न माध्यमों में इन्टगलियों, एंचिग, विस्कोसिटी एक्वाटिंट, लिथोड्राई प्वाइन्ट, द्वारा अनेक मौलिक अभिव्यक्ति की है। भारत में यहां छापाकला के क्षेत्र में विकास हुआ।

ऐसे ही आगरा (उ०प्र०) में ललितकाला संस्थान में 2004 में एचिंग मशीन की स्थापना हुई। यहां के ग्राफिक विकास के गुरू संजीव किशोर गौतम जोकि भारत में ही भारत से बाहर भी छापाकला में अपना नाम कर चुके हैं। बहुत ही कम उम्र में ही नेशनल, इन्टरनेशनल अवार्ड प्राप्त किया और इनके छात्रों के भी कई–कई अवार्ड प्राप्त कर चुके। इनका जन्म बिहार के सोनपुर जिले में हुआ था।

इन्होंने B.F.A. बनारस के B.H.U. विश्वविद्यालय से प्राप्त की और M.F.A. खैरागढ़ विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की। इन्होंने छापाकला के विभिन्न माध्यमों में इन्टगलियों, एचिंग, एक्वाटिंट, लिथोड्राई, प्वाइन्ट लीनोकट, बुडकट में काम किया। बुडकट का इन्होंने विश्व में सबसे बड़ा प्रिन्ट निकाला है। भारत में यहां छापाकला बहुत अच्छा विकास हुआ है। नई–नई टेक्नीक का प्रयोग करते हैं। ऐसे काम करते रहे तो एक दिन भारत में क्या विश्व में नम्बर वन पर आगरा का ललित कला संस्थान होगा। कृष्णा रेड्डी जो डॉ० भारत के रहने वाले हैं। उन्होंने मल्टी कलर विस्कोसीटी में प्रिन्ट विश्वविख्याता है। इनके रंगों में पारदर्शी प्रभाव है। गुआहाटी के मोनी बोर पुजारी के छोटे आकार के आकर्षक छापे तकनीकी उत्कृष्ठता के उदाहरण है। इनके छापों में रंगों का पारदर्शी प्रभाव है।

वी०के० ललितकला महाविद्यालय भुवनेश्वर के स्थापना के बाद राज्य की छापाकला गतिविधियों में बहुत गति आई है। डी०एन० राव के निर्देशन में यहां के छात्रों ने अनेक माध्यमों में छापे बनाये है।

राष्ट्रीय ललितकला केन्द्र भुवनेश्र की स्थापना के बाद यहाँ के युवा कलाकार केन्द्र की कार्यशाला में कार्य करने लगे। केन्द्र में अखिल भारतीय छापाकला शिविर अन्तर राष्ट्रीय छापा शिविर से यहाँ युवा कलाकारों का छापाकला के प्रति और उत्साह बढ़ा। इससे यहाँ के समकालीन छापाकला पर बहुत प्रभाव पड़ा है।

बिहार में छापाकला की गतिविधियाँ केवल पटना में ही सीमित है। पटना में छापाकला विभाग की स्थापना सन् 1966 में प्राध्यापक श्याम शर्मा ने की। श्याम शर्मा मुख्य रूप से काष्ठ छापा बनाते हैं। समतल लकड़ी से प्रकाश छाया का प्रभाव भी इन्होंने अपने काष्ठ छापा में किया है।

संदर्भ

- इस्ट्रेशन एण्ड ग्राफिक्स–Vol-I
- भारतीय छापाचित्रकला–डॉ० सुनील कुमार
- आर्ट एण्ड आइडियाज–मुलक राज
- डिजाइन टाक–जितेश पटेल

कला में श्रृंगारिक प्रेम का अन्तर्सम्बंध

संजीव कुमार*

कला क्या है?

कला क्या है? सुनने में तो प्रश्न बहुत सरल लगता है लेकिन कला शब्द, अनेक तरह के मानव कार्य–व्यापारों के लिए, बिना किसी विवेक के प्रयुक्त किया जाता रहा है– मानव के उदात्त उद्यमों से लेकर केश–विन्यास या शतरंज खेलने के कौशल तक के लिए। इसलिए कोई एक परिभाषा इस शब्द को पूरी तरह स्पष्ट नहीं कर पाती। यदि हम कला शब्द को उसके स्वाभाविक क्षेत्र तक ही सीमित रखें यानी संगीत, साहित्य, नाटक, चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला और हस्तकला तक, तब भी कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिलता। कला तथा सौदर्यशास्त्र के लेखक इस प्रश्न का कोई निश्चयात्मक उत्तर पाने में असमर्थ रहे हैं। अतः कला का किसी मान्य परिभाषा के बिना और किसी नई परिभाषा को गढ़ने की परेशानी से बचते हुए, हम इस अमूर्तन से बाहर निकलें और यह जानने की कोशिश करें कि कोई कलाकृति कैसे अस्तित्व में आती है।

जैसा कि आमतौर पर माना जाता है, सृजन–आवेक ही सभी कलाओं की मूल शक्ति होता है। संगीतज्ञ ऐसी रचनाओं का सृजन करने के लिए प्रेरित होता है, जो सुनने में अच्छी लगें; लेखक पढ़ने में अच्छी लगने वाली रचनाओं के सृजन के लिए प्रेरित होते हैं, जो देखने में अच्छी लगें। यह सृजन का रोमांच, कोई नई चीज बनाने की उत्तेजना ही है, जो इसके लिए श्रम करने तथा सर्जक को शक्ति प्रदान करने में सक्षम बनाती है। जैसे ही कलाकार का सृजन सजीव हो उठता है, वह परम आनंद का अनुभव करने लगता है। तब वह सम्राट होता है, अपने छोटे से संसार का ईश्वर होता है। मैं जब चित्र बनाता हूँ, तब स्वयं को राजकुमार की तरह अनुभव करना चाहता हूँ, एक महान जापानी कलाकार का कहना है और यही इच्छा हर सच्चे कलाकार के अवचेतन मन में बसी होती है।

मलींगा वात्सायन को 64 कलाओं का जानकार माना गया है, ये 64 कलाएं हैं, 1. गायन 2. वाद्य 3. नृत्य 4. चित्र कला 5. माथे को सजाने की कला 6. जमीन को सजाने की कला 7. फूलों से जमीन को सजाना 8. दांत को रंगना तथा होंठों व गालों को चित्रित करना 9. रंगीन पत्थरों को जमीन पर सजाना 10. सोने के लिए बिस्तर बनाना 11. पानी के खेल 12. अपनी खूबसूरती से लुभाना मोहना 13. फूलों की माला बनाना 14. बालों की सजावट के लिए फूलों को लगाना 18. बहुमूल्य रत्नों को तराशना 19. मन बहलाने के लिए छोटे–छोटे जादू 20. त्वचा को सुन्दर बनाने तथा काम इच्छा को बढ़ाने के लिए मिश्रण तैयार करना 21. हाथ की सफाई 22. मदिरा बनाना 23. पाक शास्त्र 24. सिलाई–कढ़ाई 25. गुड़िया

*प्रवक्ता, राजकीय कला महाविद्यालय, चण्डीगढ़

बनाना 26. वीणा व दूसरे साजों की सरगम सीखना 27. कूट प्रश्नों को हल करना 28. श्लोक प्रतियोगिता 29. कठिन श्लोकों, दोहों का सही उच्चारण करना 30. प्राचीन ग्रन्थों के श्लोकों का गीत के रूप में उच्चारण, 31. अभिनय 32. पंक्ति के रिक्त स्थानों को भरना 33. लकड़ी की नक्काशी 34. गलीचा बनाना 35. वास्तुकला 36. सोने व रत्नों की बनी सामग्री का मूल्यांकन करना 37. रासायन बिद्या 38. रंगीन स्फस्टिक 39. बागवानी 40. पक्षियों व जानवरों को आपस में लड़ना सीखना 41. तोतों को सिखाना 42. शरीर की मालिश करना 43. हाव–भाव बनाना 44. गुप्त भाषा सीखना 45. भाषाएं सीखना 47. जानवरी जैसे हाथी, घोड़ा आदि को फूलों से सजाना, बनाना 50. स्मृति प्रशिक्षण 51. कविताएं लिखना, बनाना, 52. प्रमुख व्यक्तियों के लिए श्लोक लिखना 53 कोष रचना कला 54. श्लोकों में रिक्त स्थान भरना 55. आकारों की भाषा 56. ऐसी बोली बोलना मानो किसी दूर के व्यक्ति द्वारा बेाला गया शब्द आ रहा है। 57. भेष बदलने की कला 58.

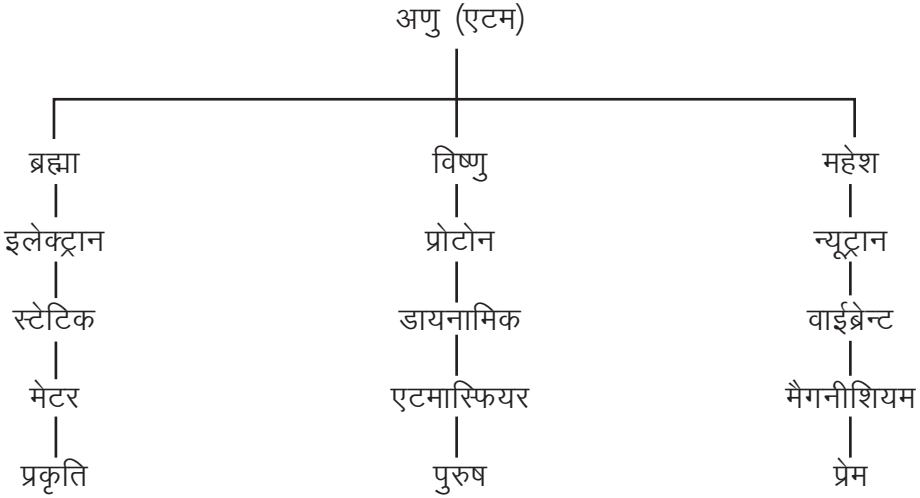

जुआ 59. शतरंज 60. कपड़े पहनने की कला 61. गेंद के खेल 62. पालतू जानवरों को प्रशिक्षित करना 63. लड़ाई की कला 64. शारीरिक संस्कार।

कला की परिभाषा जानने के पश्चात् प्रश्न यह उठता है कि प्रेम क्या है? इसके बारे में दार्शनिकों एवं मनोवैज्ञानिकों आदि ने अपने–अपने विचार प्रकट किए हैं, और आज तक इस विषय पर शोध कार्य जारी है, विज्ञान में भी इसकी कोई निश्चित परिभाषा नहीं मिलती फिर भी प्रेम की उत्पति इस प्रकार मानते हैं–

प्रेम क्या है? क्या यह मात्र सौन्दर्य की अभिव्यक्ति मात्र है, अथवा वासना का कोई हिस्सा, कुछ लोग प्रेम को रहस्य मानकर इस विषय पर बहस नहीं करना चाहते। नहीं यह एक भावना है हमारे मन की प्रेम ताकत है। प्रेम मानवीय दूरियों को

कम करने का एक रास्ता है। प्रेम प्रवृत्ति प्राणी की मूल प्रवृत्तियों में सबसे सशक्त प्रकृति ही प्रेम है। जोकि सारी सृष्टि को बांधे हुए है। यह विश्वव्यापी है। प्रेम कोई पदार्थ या वस्तु नहीं हैं, प्रेम में कुछ बातें शामिल हैं। जैसे एक दूसरे के लिए चिंतित रहना, उत्तरदायी होना, आदर करना। उत्तरदायी होना आदर करना और उसके बारे में जानने से तात्पर्य अव्यक्त इच्छाओं का पूर्ण होना है। आदर और सम्मान का मतलब डर या भय नहीं है।

प्रेम का अर्थ है, आकर्षण। प्रेम चुम्बकीय सिद्धांत के आधार पर काम करता है, यह आकर्षण ही सृष्टि का आधार है। सिर्फ मनुष्य ही नहीं वरन् सभी प्राणियों का मुख्य आकर्षण विपरीत यौन होता है। यह प्राकृति का नियम सा है, क्योंकि इस आकर्षण के बिना सृष्टि सम्भव नहीं। इस आकर्षण और एक दूसरे के प्रति खिंचाव को ही प्रेम कहा जा सकता है। विपरीत लिंग के लोगों के सम्बन्ध में वासना भी शामिल होती है, जो कि प्रेम का ही हिस्सा कहा जा सकता है, क्योंकि वे एक दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं और प्रेम क्रीड़ा करते हैं। यह आकर्षण ही सृष्टि का आधार है।

प्रेम का दूसरा नाम है, विश्वास! विश्वास जितना कम होगा प्रेम उतना ही कम होगा। आज मनुष्य के अस्तित्व का एक मात्र संतोषजनक और पवित्र उत्तर प्रेम है, प्रेम से जीवन में मिठास आती है, प्रेम में लम्बे समय तक पीड़ा होती है, प्रेम किसी से ईर्ष्या नहीं करता, घमण्ड नहीं करता, प्रेम किसी का बुरा नहीं सोच सकता, प्रेम जबरदस्ती नहीं किया जा सकता है, प्रेम जीवन की कठिनाई और समस्याओं का सामना करने की शक्ति देता है। एक व्यक्ति जब दूसरे व्यक्ति को प्रेम करता है, तो गहराई में उतरने के लिए उसके बारे में अधिक जानने की कोशिश करता है। सही मायने में खुश रहने के लिए प्रेम की आवश्यकता होती है। मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए हमें प्रेम की आवश्यकता होती है। मित्रता, पारिवारिक बन्धनों या रोमांस में लगे लोगों का मानसिक स्वास्थ्य दूसरों की तुलना में बेहतर होता है।

प्रेम के रूप : ग्रन्थों में इसके तीन रूप मान गए हैं।

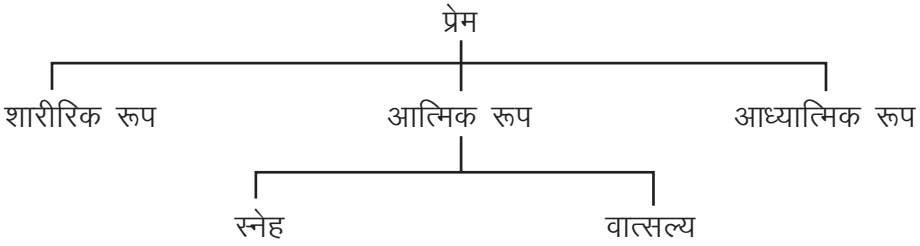

आत्मिक प्रेम

इस सम्बन्ध में आत्मा का आत्मा से सम्बन्ध होता है, इसमें वासना का कोई स्थान नहीं होता। इसके दो रूप हैं।

स्नेहः पिता का पुत्र के साथ, भाई का भाई के साथ, दोस्त का दोस्त के साथ, भाई का बहन के साथ, बहन का बहन के साथ आदि सम्बन्ध स्नेह के उदाहरण हैं।

वात्सल्य : इस सम्बन्ध में माता व उसके बच्चे का सम्बन्ध होता है।

शारीरिक प्रेम

इस सम्बन्ध में आत्मा के अलावा शरीर भी शामिल होता है। जब आत्मा और शरीर का मिलन होता है, तो वह बहुत सुन्दर होता है क्योंकि यह मिलन ही सृष्टि का आधार है। इस प्रेम में वासना भी शामिल होती है। जब विपरीत लिंग के लोग आपस में एक दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं और प्रेम क्रीड़ा करते हैं, तो इस क्रिया से मिलने वाला आनन्द ही परमानन्द कहलाता है। इस सम्बन्ध को लेकर कलाकारों ने अपने–अपने विचार प्रकट किए हैं। हमारे यहां तो इसका सबसे अच्छा उदाहरण खजुराहो, कोणार्क के मंदिरों पर उकेरी गई कृतियां हैं। जिनमें स्त्री और पुरुष को सम्भोग की विभिन्न मुद्राओं में बनाया है।

आध्यात्मिक प्रेम

इसमें आत्मा का ब्रह्मा के साथ प्रेम होता है। इसमें शरीर का कोई मतलब नहीं होता, जैसे भक्त का भगवान से, राधा का कृष्ण से। इस सम्बन्ध को स्थापित करने के लिए व्यक्ति को इस प्रकृति से ऊपर उठना होता है। हर व्यक्ति का प्रमाण अलग–अलग होता है, जो कि अपने ज्ञान के ऊपर आधारित है। जैसा कि चित्र सं. 7 में दिखाया है, जिसमें एक परी जो कि मानो स्वर्ग से आयी लगती है, और वह अपने भक्त को याद करने पर उससे मिलने आई हो मानो वह उसके सारे कष्ट सुनकर दूर करने के लिए ही आई हैं।

हमें Erotic शब्द का अर्थ समझने के लिए यह जानना जरूरी है, कि इसकी उत्पत्ति (Greek शब्द EROS) से हुई है, जिसका अर्थ है, प्यार का भगवान इसको समझने के लिए हमें इसे तीन भागों में विभाजित करना पड़ेगा। Elementary Erotic (Sculpture) Motife जिनके की सबसे अच्छे उदाहरण भारतीय कला में ''शाल भंजिकाएं'' हैं। मिथुना का अर्थ है, स्त्री–पुरुष जोकि शारीरिक सम्बन्ध में हो या नहीं भी हो लेकिन यहां हम शारीरिक सम्बन्ध को ही मिथुना का सही अर्थ कहेंगे। 3D Carved Sculptures and figures जोकि अस्वाभाविक शारीरिक प्रेम की अधिकता की दर्शक तक पहुँचाता है। इसके अन्तर्गत शारीरिक सम्बन्ध की शुरुआत करने के पहले की गतिविधियों से पूर्व शारीरिक सम्बन्धों को कला में दर्शाया गया है। कलाकारी के बदलते स्वरूप व नमूने कला में मिलते हैं। भारतीय कला में पुरी, खजुराहो, भुवनेश्वर आदि जगह तो काफी प्रसिद्ध हैं, लेकिन इनके अलावा भी कुछ जगह हैं, जहां पर इस प्रकार की कृतियों के उदाहरण मिलते हैं। जैसे मदसार, असापुरी, झार जो कि मध्यप्रदेश में हैं तथा आन्ध्रप्रदेश में आलमपुर, पालमपट्ट और कर्नाटक में बैलगवी, बादामी व गुजरात में मुधेरा आदि प्रमुख हैं।

साहित्य के चार प्रमुख वेद हैं (1) ऋग्वेद (2) सामवेद (3) यजुर्वेद (4) अर्थवेद। जिनमें हम स्पष्ट रूप से कला व प्रेम के अन्तर्सम्बन्ध के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

वेद पुराण समय के मानव की प्रतिकात्मक सोच का वर्णन है जोकि हमारे प्रेम व शारीरिक संबंधों को हमारे रीति रिवाजों के अनुसार गहरे रूप से प्रस्तुत करते हैं।

ऋग्वेद के अनुसार पृथ्वी नारी हैं और बादल पुरूष है। इसके अनुसार स्वाभाविक शारीरिक सम्बन्ध को ''अजामी'' और अस्वाभाविक शारीरिक सम्बन्ध को ''जामी'' प्रकार के सम्बन्ध कहा जाता है, जिसमें नारी–नारी व पुरुष–पुरुष को मैथुनरत दिखाया है। अथर्वेद के अनुसार मैथुन एक शुभ प्रतीक के रूप में माना गया है।

पुराण

शिव पुराण

शिव पुराण में काम क्रिया को ब्रह्मानन्द के समान माना गया है। इसमें लिंग उत्पत्ति और उसकी पूजा के रीतिरिवाज को लिंग पूजन से जोड़ा गया है। वैसे तो हर पुराण में इसे अपने–अपने तरीके से शिव को अनेक प्रकार व नाम दिए गए हैं। जैसे अगरा लिंग पुराण में, वैलीन, भृगुपुराण में, करमा पुराण में नकुनीन, वायु पुराण में कणिका और भागवत पुराण के अनुसार शाम का समय काम के लिए है। पौराणिक परम्परा के अनुसार युगल का विचार ''प्रजापति'' के उद्‌गम जोकि अर्धनारीश्वर के रूप में हे। पुराण में कई देव युगल जैसे ब्रह्मा और लिंग पुराण से पता चलता है, कि जितनी भी स्त्रियाँ हैं, वे प्रकृति से जन्म लेती हैं तथा पुरुष का जन्म शिव से पुरूष का, पुराणों के अनुसार अर्धनारीश्वर रूप वाम् अंगम् (स्त्री) और दक्षिणांगम् (पुरूष) का मिलन है, जोकि सृष्टि के स्वरूप का आधार है। पुराणों के अनुसार मैथुन सृष्टि मानसिक सृष्टि के बाद आती है। शिव पुराण में बताया गया है, कि मानसिक सृष्टि के बाद मैथुन सृष्टि की उत्पत्ति होती है। महाभारत के अनुसार द्रुपर युग व कलयुग (Druparayuga and Kaliyuga) के समय से मैथुन द्वारा संतान उत्पत्ति प्रारम्भ हुई।

नाट्य शास्त्र

''भरत मुनि का नाट्यशास्त्र भारतीय नाट्य शास्त्र का एक प्रमुख ग्रंथ है। जिसमें उन्होंने काम को सारे भावों को उत्पन्न करने के लिए एकमात्र स्रोत बताया है। आलम्बन व उद्दीपन विभाव में उन्होंने विभिन्न भावनाओं का वर्णन किया है। भरत मुनि के अनुसार 49 प्रकार के भाव हैं, जिनके द्वारा रस उत्पन्न होते हैं। **''रतिरस''** विपरीत लिंग के साथ शारीरिक सम्बन्ध की इच्छा को जाग्रत करता है। श्रृंगार रस के उद्‌गम् के बाद ही रति रस का आरम्भ होता है। उन्होंने प्रेम को दो प्रमुख भागों में बांटा है। पहला है, सम्भोग व दूसरा विभोग। भरत मुनि ने स्त्री के यौवन को चार भागों में विभाजित किया है। 20 वर्ष से कम, 20 से 30 वर्ष के बीच, 30 से 40 वर्ष के बीच व 40 से ऊपर। नाट्य शास्त्र के अध्याय नं. 24 में 23 प्रकार की स्त्रियों का वर्णन

किया गया है। आठ प्रकार की स्त्रियों जो प्रेम में लीन है, उनका वर्णन है। वाक सज्जा जो प्रेम में लीन हो वीरहोतकम्पीता, स्वादीन भरत्रीका। नाट्य शास्त्र में छाती व जांघ के रुझान को पांच प्रकार का बताया है। ''अभगन निरभगम, प्ररकमपीता, उदवहीता, समकमपना, वलना, स्तभना, उदवरतन, विवरतन''। भरतमुनि ने श्रृंगार रस को स्त्री व वीर रस को पुरुष के लिए अतिरिक्त तत्त्व माना है। काम रस के सारे भावों को उद्‌गम् होता है। जैसे ''धर्मकाम, अर्थकाम, काम काम और मोक्ष काम'' आदि इन सब भावों के अनुसार इच्छा ही आनन्द का आधार है।

नाट्य शास्त्र के अनुसार प्रेम भाव के दो प्रकार हैं, अभियन्त्रा और भय। जिसमें अभियन्त्रा का अधिक विवरण है।

अर्थशास्त्र

अर्थशास्त्र जोकि कौटिल्य द्वारा रचित हैं, उसे परम्परा में आदर दिया गया है। ऐतिहासिक परेशानियों के बावजूद अर्थशास्त्र मौर्य समाज के दिशा निर्देशक के रूप में आदर के साथ देखी जाती थी। अर्थशास्त्र के अनुसार किसी भी इन्सान को बिना नारी आज्ञा के शारीरिक सम्बन्ध बनाने की अनुमति नहीं थी। उन्होंने लिखा कि कोई भी व्यक्ति अपनी पत्नी के साथ मैथुन क्रिया को मना नहीं कर सकता था जब तक की कोई विश्वास से भरा कारण नहीं हो परन्तु कोई व्यक्ति ऐसा करता है, तो उसे दण्ड दिया जाना चाहिए। इसमें कहा गया है, कि दुल्हन को कुमारी (पवित्र) होना चाहिए। उन्होंने इस शास्त्र में एक पुरुष को एक से ज्यादा स्त्री रखने पर भी सहमति जताई परन्तु विवाह द्वारा। उन्होंने अर्थशास्त्र में बिना अनुमति पत्र प्राप्त वैश्याओं को भी जिक्र किया है, जो कि पत्नियां हैं, और पर पुरूष से सम्बन्ध रखती हैं एवं कहा गया कि जो भी इन्सान इस सबमें सम्मिलित होगी उसे 12 पन्ना का दण्ड दिया जाएगा। अर्थशास्त्र में वैसे तो पूरी तरह से मैथुन क्रिया के बारे में नहीं बताया गया, पर हमें कहीं न कहीं उनके यौन सम्बन्धों के नियमों के बारे में पता चलता है, तथा यह भी स्पष्ट प्रमाण मिलता है, कि यौन सम्बंध के लिए कुछ नियम कानून था।

गाथा सत्पसती

हाला द्वारा रचित ग्रंथ गाथा सत्पसती एक गधावली है, जिसमें प्रकृति के काफी सारे प्रेम सम्बन्धी विचारों का वर्णन है। इसमें बदलते स्वभाव व प्रभाव तथा अनुभावों के बारे में बताया गया है। इसमें एक कामुक स्त्री किसी अन्य स्त्री से कहती है, कि इस अंधेरी रात में मेरा पति घर से दूर है, घर एकदम खाली है। ओ पथिक मेरे घर पर आओ मेरी रक्षा करो।

गाथा सत्पसती में अनुभवी नाईकाएँ हैं, जोकि अपने प्रेमी और साथी के साथ पूरी तरह नियन्त्रण में हैं, इनमें से कुछ नाइकाओं के नाम हैं, (Disappointed, Passionate Sex, charged, deceived, outraged, expectant, Saparated" जो आम इन्सानों में से ही आती है, और कुछ अपवित्र पत्नियां अपने पति के भाई के साथ भी प्रेमरत दिखाई गई हैं। युवा स्त्री मधु उत्सव में मदिरापन करती थी और उनका

मानना था कि केवल प्रेम ही युवा लोगों को कुछ न सिखाने वाली चीजों को सिखाता है। वैसे हमें गाथा सत्पसती में कोई वैश्यावृति का उदाहरण नहीं मिलता, हमें गाथा सत्पसती में बहुत सारे वाक्य मिलते हैं, जिसमें प्रेम प्रक्रियाओं की बहुत सारी अवस्थाओं वासना को पूरा करने की जिज्ञासा और यौन सम्बन्धों के बारे में बताया गया है।

कामसूत्र

''कामसूत्र अथवा प्रेमसूत्र'' मुख्यतया संस्कृत साहित्य से प्रथावित है। कविता और नाटक के लिखने से पहले वात्सायन ने यह ग्रंथ लिखा। जिसमें प्रेम क्रियाएं और कला का वर्णन है। समय के साथ–साथ इस ग्रंथ में संस्कृत लेखों को इतना प्रभावित किया कि उन्होंने इन्हीं के द्वारा दिए गए नियमों का विस्तार किया। यह काम सूत्र भारतीय धर्म एवं समाज के नियमों को बनाने में सहायक हो गया। इसमें लेखक ने प्रेम को एकविज्ञान के रूप में प्रस्तुत किया। मलींगा वात्सायन के काम सूत्र में 2250 श्लोक हैं, जो कि सात भागों में विभाजित है। ममरव व अन्य प्राचीन लेखक वात्सायन को प्रभावित करते हैं। जय मंगला और सूत्रवरति जिसमें से एक हैं। मुख्यतया भाग एक में पांच अध्याय है जिसमें सामर्थ, प्रेम एवं प्रभाव का अभिमुखिकरण है। इसमें 64 प्रकार की कलाओं का विवरण है। जिसमें उस समय के नागरिकों का अध्ययन किया गया व उन नारियों का उल्लेख किया गया जो शारीरिक सम्बन्ध बनाने के लिए अनुकूल थी या नहीं थी।

उपरोक्त विवरण से हम कह सकते हैं कि कला और श्रृंगारिक प्रेम में गहरा अन्तर्सम्बंध है, दोनों एक दूसरे के बिना अधूरे हैं। यह प्रवृत्ति ही इस संसार में विद्यमान सभी सृजन का मूल स्रोत है।

सन्दर्भ

1. अर्थशास्त्र पृ.स. IV, 12.87
2. N.N. Bhattacharya, 1975, History of Indian Erotic Literature, (trans) pg. 88
3. स्कन्द पुराण 145–156
4. नाट्य शास्त्र, VI. 39-40
5. P.S.R.A. Rao, 1967, A Monograph on Bharata's Natya-sastra, (trans) pg.20

NAYANTARA SAHGAL'S *LESSER BREEDS* : PART I- AN OBSERVATION

Dr Indira B Shetkar*

INTRODUCTION

Nayantara Sahgal's ninth novel *Lesser Breeds* is a historical novel dealing with the turbulent times of the 1920s and '30's down to within two years of India's Independence, that is, the end of World War II. The post-Independence generation, and certainly the later ones, do not know what it was to be subjects under a colonial power, what atrocities were committed by the colonial rulers against the freedom fighters, and how unjust was the British regime, as also the challenge that the satyagrahis, the non-violent agitators, posed before the armed constabulary of the British Government with which it meant to suppress the Movement. "The distinctness of Gandhi's way in a world that conceives of certain human beings and races as "the lesser breed" becomes the theme of Sahgal's novel *Lesser Breeds*. Sahgal like Gandhi , borrows the phrase from Kipling's poem of 1897,"The Recessional", the second-last stanza of which contains the uneasy phrase that forms the epitaph to the novel. However, in responding to the same source – Kipling's poem and phrase – *Lesser Breeds* highlights the miraculous yet highly human possibility of the marginalized undertaking agency and responsibility."[1]

Quite a few details add up to make a picture of the times in which Indians lived, their status being that of second class citizens. When Nurullah, a Professor, cycled to the university campus to procure dispensary items, for the dispensary set up in one wing of Nikhil-Da`s big bungalow, he had to take his turn after the Angrez customers had been served, at King and Company in the Civil Lines.(p 32)

The novel falls into three parts:

I Company Bagh (pp.1-216)

II An Island called America (pp 217-355)

III Trade wind (pp 357-369)

The first part,Company Bagh, deals with leader Nikhil-Da`s mansion in Akbarabad (a surrogate name for Delhi) where the freedom fighters meet and camp and discuss the day-to-day development on the political front. It had been every patriot`s Mecca for over decade (since 1921). It isn`t that all of them have unshakeable faith in the Gandhian Philosophy and the weapon of non-violence with which he sought to fight

*Associate Professor, Sharnbasveshwar College of Arts, Gulbarga-585102

the oppressors. Having seen that the Movement had not produced even a shudder in the ruling power, some of them did contemplate violent means towards achieving the end of India`s emancipation from the foreign yoke – men like Eknath, a history Professor. He couldn`t puzzle out why 'soul force' had possessed the country and sent hundreds of thousands of people to jail. (p 44) Gandhiji's policy of offering no resistance, to let the enemy 'slash, and stab, and maim and hew', to suffer till the enemy`s rage has died away, breathed the very spirit of Shelley's Mask Of Anarchy. But Eknath, the historian, believed that for savagery as way of life the Europeans took the prize. 'If you want a place in history' he advocated, 'do as Europe does'. (p 42) This part is, whatever else it may or may not be, about the socialization of Nurullah who as a child did not know what soap was or was meant for, and his gradual mental conversion to Gandhiji`s philosophy of non-violence and into becoming party faithful and an aide of Nikhil-da and his band.

Nurullah has an additional role assigned to him – of tutoring Shan – Nikhil-da's 6-year-old daughter. Nikhil-da had decided that the Sacred Heart Convent did not suit her temperament. What he wanted was 'counter teaching'. (p 23) Nurullah sometimes recalled the circumstances in which his mother was being punished by an evil-doer, and how if a good samaritan had not saved the girl-mother from the torture and befriended the boy, he would have had nowhere to go. The first lesson of Nurullah in 'counter teaching' was while everyone who came surrendered to the spell of Hindustan, only Europeans did not. **"**The 'epiphany' on the strength and power of non-violence does not remain a passing phase with Nurullah. In such a frame of mind, convinced of its truth, he even marks a poem on the subject of non-violence in a text book for his class the next day:

And if then the tyrants dare
Let them ride among you there,
Slash, and stab, and maim and hew…
What they like, that let them do.
With folded arms and steady eyes.
And little fear and less surprise.
Look upon them as you slay
Till their rage has died away. (p 45)**"**[2]

Once while on an evening stroll he crossed over into Colonelgunj, he was stopped by a police van and taken to the police station and he spent a night in police lock-up. He had not known that there was curfew because an Angrez had been found dead in suspicious circumstances. From the

morning newspaper he understood it was the manager of the Imperial Bank, Mr. McCracken. The paper editorialized that during Martial Law in the Punjab in 1919, the bank managers had been targets of misguided revolutionary fervor. 'But that was in 1919', Nurullah had remarked to Eknath 'what makes them so jumpy now?' And Eknath had countered, 'For the authorities it is always 1919, and in Akbarabad it is still 1857 as far as they are concerned.'(P 74) He expatiated that bank murders, mobs (Kisan) rallies, mutineers – were the stuff of Angrez brain fever. 'They had violence on the brain though they were dealing with ahimsa now' (p 75). To Eknath's remark: 'They would probably hang one to be on the safe side', Nurulllah`s rejoinder is, but there is the law and there are law courts. He himself knew, at first hand, that a Magistrate had refused to register a Kisan's complaint against an Angrez Planter. Nurulllah was simplistic enough to judge the Angrez through his reading of English literature. His perception was that they were a just and upright breed who ruled even those they subjugated according to the law. He had to learn that Life and Law were two domains apart, even as Life and Literature were.

We incidentally learn that the master (Nikhil-da) had made a tour of the countryside and seen with his own eyes the near-famine conditions prevailing there. And at land-rent had been raised. The Crown had made Zamindars the owners of all cultivable land, so that they would act as revenue-collectors for the Government. As a result, the kisans were reduced to serfdom. A conference convened at Akbarabad was poised to launch a No Tax campaign. With the Congress leaders outlawed they had no one to turn to. We learn about the brutality of the police at Dandi Salt Satyagraha in 1930. However, police brutality had moderated in the space of only two years, which surprised the volunteers. The punishments were inhuman and disproportionate. It was quite usual for one who threw a bomb to be hanged; for lesser crimes – editing a paper and criticizing the government (which was dubbed 'seditious') or airing Kisan problems or taking part in the Kisan uprising could earn banishment and proscription of the paper.

The Europeans owned most of the world`s land and natural resources, especially oil and raw materials like cotton and jute. A map prepared by an unusual cartographer lay spread out on a wall in Bhai's(i.e., Nikhil-da's) library, which showed how the Europeans-the English, French, Portuguese, Spanish and the American together owned a large part of the world. A plan for Shan was forming up in Nikhil-da's mind. He wanted to send her to university abroad, to breathe the air of a free country. Edgar wanted Nikhil-da to leave the arrangements for her

education to him. Such sifting and recording of facts might have seemed to belong to an exercise in History Revisited, not to Fictional discourses, but it makes its entry by a plausible excuse, that is, by way of correction of Shan`s knowledge of history and geography. For the proper education of Shan, Nurullah had to unravel the story of how history had been distorted, and how the English annexed large chunks of India and consolidated their empire. "First they came as traders to trade, then they got greedy and broke the trading rules, then they armed themselves to protect their ill-begotten profits , then they hired soldiers and built fortresses to defend the loot. Then they grabbed land and called it theirs. The story of empire, dost. It goes from Company to Cantt to Crown". (p 81) Clara A.B. Joseph writes, "Shan as The lesser breed is a literary and metaphoric contrast and antonym to the colonial literary terminology of the lesser breeds that breeds the narrative…" [3]

Bhai's sister, Nina and other relatives had come for a family reunion on Bhai`s home coming after a spell of absence in jail. Jeroo, Nina`s friend, conversationally, puts forth the view: 'What`s wrong with the British being here? It is history now. Why not let them stay?' Bhai's answer 'because we can`t afford them'. (P102) He elaborates, 'The very first year the East India Company took charge, it raised land revenue by a hundred percent, and by another hundred percent over the next ten years. The famine in the province killed ten million people but Warren Hastings was proud to report that revenue collection in 1771 had gone up even though cultivation had dropped drastically because a third of the population had been wiped out.' (p 102) He goes on to add that it was not just history. The loot has continued. 'The company`s enormous profits from the land and from its trading monopoly went back to Britain to finance their spinning jenny and power loom and steam engine. When the Crown took over from the Company, most of this "tribute" was lent back to India and called the public debt. When Indian tax-payers repaid it, it was used to finance British wars… And who funds their petroleum ventures in Iran and Iraq, Saudi Arabia and Kuwait?'(p 102)The best brains of the country had lectured and campaigned, but the mock councils and legislatures served no purpose; the resolutions passed by them carried no weight.

'How pertinent is ahimsa in face of an imperial power bent on repressing all revolt and rebellion? is a question many in those days must have asked and many in this day and age? Confronted by Nurullah with a similar question, Nikhil-da answers: 'What else have unarmed people got?' 'But since you ask', continued Bhai, 'it has been a great education for

us and a greater human experience. Already it has changed us. Other changes will come'. (P 108) Was it David Hume who had propounded the doctrine of Ahimsa or Thoreau? Sahgal is not in the habit of making identities explicit; she has a fondness for referring to people and personalities very often by allusive description. "…by subordinating Nurullah to the Gandhian principled "Bhai" whose motto is ahimsa, Sahgal appears to suggest that decolonization can indeed be effected only through resistance, but also that the only kind of resistance that can truly succeed is non-violence."[4]

There comes in the midst of the bustle of talk and discussion, comings and goings of people at Nikhil-da`s monument-like mansion, an interlude like the casual fling involving Nurullah and Miss Basappa. Sahgal's description of the effect runs like this: 'under the sheltering, victorious arch the night became a banquet… A century of progress had taken place far into the night. Things had irrevocably changed. His very brain cells had grown and multiplied.' Nurullah finds that text books, such as were prescribed in school and college, began with the arrival of Europe on the World scene. It was annoying to know all knowledge was Europe-ordained. Having to tutor Shan had put Nurullah on the road to discovery. In an eye-witness account of the Columbus era by a historian named Bertelome Cascas he had read awesome details of how the English, Spanish and Portugese had exterminated the aborigines of America.

Nurullah meets Edgar Knox at a party at the Ghasvalas. Edgar Knox was an American and a liberal, and as such a friend of India. When Edgar, as a news reporter, was reporting the run-up to war in Europe, Europe was remote enough for his fellow Americans (who were an Island nation) His editor had suggested to him that he omit India in his tour this time, because nothing was happening there. 'India isn`t news' The Bengal famine hadn't been news either. Sam, the editor, set, 'Gandhi may be a household word out but here he is a word for a loony bag of bones. And Great Britain happens to be our ally. There's a point beyond which carping and criticizing shouldn`t go at this time'. (p171) Edgars taking a stand on independence for India right now, would not go down well with the British, and so with the Americans. The leading American papers had called the Mahatma 'a dabbler in international intrigue', 'a stooge Mahatma' and so on and so forth. One of them even said the Indian leaders were traitors to civilization, since they were giving aid to the enemies of mankind. Edgar tired to convince Sam that these peoples – Indians and Vietnamese – and their leaders (Gandhi and Ho Chi Mint)

were on our side. (p173) His fervent plea was: Freedom is their Holy Grail. They quote English poets and American philosophers. They revere Western law. They beseech the United States to support their demand for freedom… I tell you these are legendary times in Asia and these men are living legends. Now is the time to befriend them.' (p173)

Edgar was a guest at the Governor`s party-Sir Humphrey Hartley was the Governor of U.P. He still remembered Edward Knox`s report about police action on the beach at Dandi. There had been 320 casualties of broken bones, gashed scalps and fractured skulls, as Edgar had found out from the hospital later. Sir Humphrey is deceived by the lull in the resistance movement–but there were individual protests nevertheless. However, the administration was on its guard. A mob around Akbarabad had plundered and burned European residences and butchered Europeans. He refers to a paper which wrote seditious matter in issue after issue. The editor was jailed and finally deported. He was attacking the land tenure system, too. When Edgar referred to a sympathetic write-up about the peasants' agrarian demands, in The Times back in 1922, Humphrey`s reaction is: judgment from London is easy, Mr. Knox. The Government here bears the brunt.' And it is a proof of how the colonial mindset can put an absurd construction even on simple matter that hand spinning which the peasants had taken to is spoken of by Mr. Humphrey as "a clear symbol of revolt".(p 183)

Edgar acquaints Lady Hartley with the fact that he has a sister who collected fairy tales. And this he does in response to Lady Hartley`s query as to what had intrigued him about the non violent movement. But what is the connection? asks Lady Hartley. Mr. Knox explains that the movement is like a fairy tale that describes a journey where there are no signposts. Edgar, conversationally, asks Mr. Humphry if self-government for India was the agenda – if not now, then after the war.?' 'self-government is always on the agenda', replies Mr. Humphry,' but it is not possible to set a date for it? In fact, added he, the war has made our presence in Asia all the more necessary.' We have had to occupy Iran to prevent oil from falling into Nazi hands'. (186) Having been governor of the frontier province during The Salt stir of 1930, Humphry knew what influence Gandhi had over there. The Afghans' leader was known as Frontier Gandhi. And when men of the Garhwal Rifles refused to fire on their "unarmed brothers", the British rulers had a full-fledged mutiny on their hands.

Edgar mentions the American President, Mr. Roosevelt as taking a personal interest in the Indian question. He would like to see a provisional Indian government setup immediately, says Edgar. Asked if he was

authoring a book about this region, (S-E Asia) as rumour went, Edgar admits he was, adding that he was titling it as Empire, interested as he was in the why and wherefore of it. (p 187) The crooked British mind had put the condition, for granting independence to India after the war that every British province and native princely state would have the right to declare its own independence if it so wished! (p 192) Hadn't Abraham Lincoln gone to war on similar provocation. The Monroe Doctrine saw to it that the mother country did not interfere in the affairs of the United States. The confabulations between Nikhil and Edgar centered on the Asian blueprint for a future era.

When the summer of the 1942 arrived, the freedom movement gained a new momentum. It was also the time when the Second World War was at its height. The Civil Lines of Akbarabad rumbled with army trucks full of British and American soldiers. Bhai's party held a meeting in Bombay. Fed up with appeals and supplications, it resolved to ask the British to quit. Before the news spread, the Congress Leaders were arrested and taken away to an unknown destination. Bhai and leading members disappeared into hiding to escape arrest, Students took to the streets. The university was closed for a week. The Bombay revolt unloosed revolt across the whole province.

Ekanth was convinced that only armed rebellion could turn the tide in favor of Indians. He was an admirer of Subash Chandra Bose (he is not referred to by name, but as the patriot who had escaped the British authorities and flown out of India to seek German and Japanese help.)He proposes to Bhai that he give the signal. The Allied forces were recruiting men to train in guerilla warfare for posting on the border, Patriotic Indian youth could take advantage of that and joined the armed camp set up in the jungle on the Indo-Nepal border, by Zaheer Sahib and others. Bhai said,' I am the wrong man; I've been delivering another message too long. It is Ekanth's view that the British have left us no alternative. We should have taken up arms long ago' (p 209). Bhai felt bitter about how even when their soldiers were fleeing Asia, the evacuation arrangements made were meant only for Europeans. Our people fleeing Burma had to trudge over a 600-mile march through jungle and hills, dying of hunger, sickness and wounds. His decisive answer to Ekanth's proposal was:' 'This is no time for amateurs to enter the game' (p 209). Bhai was off to resume his underground existence. He was dressed like a mendicant, and his matted hair bore no hint of bronze and had a two month growth of beard.

When Nurullah went to station next to collect a parcel from Nina, at sight of him the mendicant's eyes lit up, and he took a step toward him.

That was enough. The secret police laid a hand on him and led him away to jail. The violent uprisings of 1942 were a setback to non-violence. Though he regretted the outbreak of violence, Pete Ryder wrote, "But they were a great step forward, if we look at the effect they had on the Raj, which non-violence never did." Lord Linlithgow wired a message to Churchill on 31st August 1942, saying that he was faced with the most serious rebellion since 1857.

1. Clara A.B.Joseph . *The Agent in the Margin. Nayantara Sahgal's Gandhian Fiction*
   Wilfred Laurier University Press, Canada, 2010, p 147.
2. Sharad Srivatsava. Nayantara Sahgal's *Lesser Breeds*: Some Observations;
   Points of View, Vol. xi, No 2. WINTER -2004, p 103
3. Clara A.B.Joseph. *The Agent in the Margin. Nayantara Sahgal's Gandhian Fic*tion
   Wilfred Laurier University Press, Canada, 2010, p 158
4. Clara A.B.Joseph in The Agent in the Margin. Nayantara Sahgal's Gandhian Fiction
   Wilfred Laurier University Press, Canada, 2010 p 150
5 Sahgal Nayantara. *Lesser Breeds*, New Delhi : Harper Collins